तीन ब्लेड। एक Gillette।

Gillette Audio — नंदो द स्क्राइब — gillettenarrative.com

जो कुछ हमारे पास सचमुच है — बिना शोर के, बिना चेतना के — वह वैसे भी आगे बढ़ता रहता है।

समय की तरह।

वह पूछता नहीं। वह चेतावनी नहीं देता।

वह आ जाता है।

उसका एक नाम है: नियति।

एक आदमी ने एक दिन तय किया कि उसे याद रखा जाएगा।

स्थानीय रूप से नहीं। अस्थायी रूप से नहीं।

मानवता के लिए।

उसके पास एक मौक़ा था।

अमेरिका में एक दोपहर, उसने ज़मीन से एक फेंका हुआ ब्लेड उठाया।

किसी और ने बोतल का ढक्कन ईजाद किया था।

उसने कुछ और देखा।

उसने कोई उत्पाद बेहतर नहीं किया।

उसने एक इशारे को फिर से लिखा।

दाढ़ी बनाना एक व्यवस्था बन गई।

ब्लेड डिस्पोज़ेबल बन गया।

नाम स्थायी बन गया।

जब लोग वह उत्पाद ख़रीदते थे,

वे उसका नाम बोलते थे।

King Camp Gillette.

फ़्रीमेसन।

The Human Drift के लेखक, 1894।

मेरे पिता।

एक खनिक और एक कुलीन माँ का बेटा।

देखभाल से पाला गया। बिना सीमाओं के गढ़ा गया।

12 बरस की उम्र में, बड़े-बूढ़े आदमी उनसे डरते थे।

इसलिए नहीं कि वे हिंसक थे —

बल्कि इसलिए कि वे हिचकते नहीं थे।

एक रात, सिनेमा जाते हुए,

उन पर अपने से बड़े लड़कों के एक झुंड ने हमला किया।

अकेले।

भागने का कोई रास्ता नहीं।

उन्हें ज़मीन पर एक रेज़र ब्लेड मिला।

उठा लिया।

उनमें से एक के चेहरे पर निशान खींच दिया।

वे सब भाग गए।

वह क्षण कभी नहीं गया।

चौदह साल बाद:

120 उम्मीदवार।

एक पद।

वे तीसरे आए।

पहले दो ने मोलभाव किया।

उन्होंने नहीं किया।

वे Gillette Italy में दाख़िल हुए।

और 40 साल टिके रहे।

सेवानिवृत्ति के बाद भी कुछ नहीं बदला।

लोग तब भी उन्हें सड़क पर रोक लेते थे।

तब भी पहचान लेते थे।

उनके नाम से नहीं।

बल्कि इससे कि वे किसका प्रतिनिधित्व करते थे।

फ्रेगा।

Gillette वाला आदमी।

वह ब्लेड।

हर सोमवार वे जल्दी निकल जाते।

हर शुक्रवार लौट आते।

कभी शिकायत नहीं की।

कभी सफ़ाई नहीं दी।

वे मेरे पिता थे।

एक दिन उन्होंने किसी से कहा कि मैं इकलौता बेटा हूँ जो सचमुच उन पर गया है।

यह मुझे बरसों बाद पता चला।

यही उनका तरीक़ा था।

कोई घोषणाएँ नहीं।

सिर्फ़ दिशा।

मैं 19 का था।

सैन्य सेवा।

पुलिस की परीक्षा पास।

वे मुझसे नेपल्स में मिले, मई 1985।

वह पिता-पुत्र की मुलाक़ात नहीं थी।

वह काम के बारे में नहीं थी।

वह कुछ और थी।

उन्होंने मुझसे एक सवाल पूछा:

“अपनी ज़िंदगी का क्या करोगे?”

कोई दबाव नहीं।

कोई सलाह नहीं।

बस इतना।

मैंने सात दिन लिए।

फिर मैं Gillette से जुड़े एक कंसोर्टियम में दाख़िल हुआ।

सबसे निचली भूमिका जो मुमकिन थी।

आप सबसे नीचे से शुरू करते हैं

अगर आपको सबसे ऊपर देखना है।

अठारह साल।

मैं वहाँ पहुँच गया।

फिर कुछ ख़त्म हो गया।

पैसा नहीं।

पद नहीं।

दिलचस्पी।

तो मैं चला गया।

वे मुझसे फिर मिले, अकेले में।

तब तक सेवानिवृत्त।

उन्होंने मुझे रोकने की कोशिश नहीं की।

उन्होंने कहा कि वे समझते हैं।

वे हमेशा जानते थे कि यह होगा।

क्योंकि मैं उन्हीं जैसा था:

अप्रत्याशित।

हमेशा किसी बेहतर चीज़ की ओर बढ़ता हुआ।

30 नवंबर 2003।

मैंने अपनी माता Gillette को छोड़ दिया।

पर मैंने DNA नहीं खोया।

तीन कहानियाँ।

तीन क्षण।

यह चौथा है।

1993 से फ़्रीमेसनरी।

पाइथागोरस।

गूढ़ अनुशासन।

आप कच्चा पत्थर लेते हैं

और उसे ऐसी चीज़ में बदल देते हैं जो भार सह सके।

दिमाग़ उसे धार देता है

जिसे दिल पोसता है।

मैं एक अंतरराष्ट्रीय मैनेजर बना।

दुनिया घूमी।

एक और अठारह साल।

फिर एक दिन

मैंने लिखना शुरू किया।

एक किताब नहीं।

दो नहीं।

दस नहीं।

पचास नहीं।

सौ नहीं।

1600 से ज़्यादा।

मैंने गिनना छोड़ दिया।

मैं पहचाना जाना चाहता हूँ।

पर मैं किताबें नहीं बेचता।

मैं पहुँच देता हूँ।

व्यवस्था को समझ नहीं आता कि मुझे कहाँ रखे।

एक स्वतंत्र लेखक जो सब कुछ मुफ़्त दे देता है

कोई श्रेणी नहीं है।

वह एक समस्या है।

मैं व्यवस्था पर हमला नहीं करता।

मैं उससे भी बुरा करता हूँ।

मैं उसमें से मूल्य निकाल लेता हूँ।

वे मुझे पढ़ते हैं।

पर वे मुझे सँभाल नहीं सकते।

वे मेरी क़ीमत नहीं लगा सकते।

वे मुझे किसी फ़्रेम में नहीं जड़ सकते।

मुझे नियंत्रित नहीं किया जा सकता।

मेरी कोई क़ीमत नहीं है।

क्योंकि मैं कुछ बेचता ही नहीं।

नियति की कभी उम्मीद नहीं होती।

मेरी तरह।

पर वह मौजूद है।

क्योंकि वह असली है।

और मैं अब भी उसकी ओर बढ़ रहा हूँ।

नान्दो

© 2026 Ferdinando Frega — सर्वाधिकार सुरक्षित
Gillette Audio — संयुक्त राज्य अमेरिका में कॉपीराइट पंजीकरण प्रक्रियाधीन